International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन

नन्द किशोर
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

उत्तम रचनाकार मानव आत्मा का चितेरा होता है। मानव चेतना, संवेदना तथा जीवन की वास्तविक स्थितियों को जिम्मेदारी के साथ व्यक्त करना उसका अभीष्ट होता है। राहुल सांकृत्यायन जी एक मानवतावादी चिंतक हैं। उनके लेखन में मानव और मानवता की प्रवाहमयता में जबरदस्त विश्वास है। इसी गतिशीलता की दृष्टि हमको , उनके उपन्यास साहित्य में परिलक्षित होती है। राहुल सांकृत्यायन जी का अटूट विश्वास है कि मानव बाधित न होने वाला एक स्वच्छंद प्रवाह है। उनके उपन्यासों में मानव के प्रगतिशील जीवन का चित्रण है। राहुल जी के साहित्य में चित्रित चित्रणों को देखकर उनपर बहुत से आरोप भी लगे। इन आरोपों के जवाब में उन्होंने दो बातें लिखी हैं - "एक तो यह कि एक-एक कहानी के पीछे प्रमाण है। दूसरा की मैं सत्य की परवाह करूँ या इन आरोपों की। वे कहते हैं कि मानव आज जहाँ है वहाँ प्रारम्भ में नहीं पहुँच गया था।"[i]

राहुल जी के रचना संसार पर विचार करें तो उनकी साम्यवाद के प्रति रूचि छुपी नहीं रह सकती थी। उन्होंने धर्म और दर्शन को आधार बनाकर जो कटाक्ष किए हैं , वह उनकी साम्यवादी दृष्टि का प्रतिफलन है। वे ब्राह्मणवाद एवं पुरोहितवाद के विशिष्ट विरोधी हैं। वे शोषण का मूल कारण एवं राजसत्ता को स्थिर करने के लिए धर्म की उत्पत्ति को मानते हैं। अश्वघोष के शब्दों में अपनी घृणा इस प्रकार प्रकट करते हैं - "मुझे ब्राह्मणों के पुराणों से अपर घृणा है , घृणा में सारा गाँव जलता है।"[ii]

राहुल जी अपने उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन से प्रेरित हैं। मार्क्सवादी शब्द का हिंदी में पर्याय साम्यवाद है। चिंतन के इतिहास में इसका उद्भव कार्ल मार्क्स (1818-1883) के विचारों से माना जाता है। मार्क्सवाद को बहुत से विद्वान क्रियात्मक दर्शन के रूप में स्वीकृत करते हैं। कार्ल मार्क्स में खुद फायर बारव पर अपनी 'थीसिस' लिखते समय इस पर प्रकाश डाला था कि अब तक वे दार्शनिक सृष्टि की व्याख्या करते रहे , परन्तु अब समय आ गया है कि हम उसका परिवर्तन करें। परिवर्तन मूलरुप से क्रियाशीलता का प्रतीक है। एक प्रकार से मार्क्सवाद के दो

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वरूप हैं - पहला:- सृष्टि और समाज का विश्लेषणात्मक अध्ययन और दूसरा :- उसी संचित अध्ययन के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का प्रयास।

मार्क्सवाद समाजवादी विचारधारा है , किन्तु समाजवाद के इतिहास में मार्क्सवाद को वैज्ञानिक समाजवाद की श्रेणी प्राप्त हुई है। वैज्ञानिक समाजवाद ऐंगल्स के अनुसार वह समाजवाद है, जो समाजवादी व्यवस्था को निर्धारित करने से पूर्व उन तमाम वैज्ञानिक नियमों का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, जिसके आधार पर सामाजिक परिवर्तन होते हैं। ऐंगल्स का मानना है कि सामाजिक गतिशीलता नियमविहीन हो ही नहीं सकती है। यदि हम इन नियमों का ज्ञान अर्जित कर लेवें तो उसी के अनुरूप समाजवादी परिवर्तन कर सकेंगे। वैज्ञानिक समाजवाद जिस स्थान पर खड़ा है, वह स्वप्नों एवं भावनाओं की कोमल भूमि नही है, वरन सत्य और परिस्थिति का कठोर धरातल है। मार्क्सवाद सृष्टि और समाज का एक समन्वित दर्शन है। इसलिए मार्क्सवाद का अपना एक दार्शनिक दृष्टिकोण भी है। इसी दार्शनिक दृष्टिकोण की पृष्ठभूमि में समूचा मार्क्सवाद समझा जा सकता है।

मार्क्सवाद दृष्टिकोण को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद वह दर्शन है, जिसके अनुसार सृष्टि का मूल सत्य पदार्थ है , परन्तु जो लगातार परिवर्तनशील अवस्था में होने के नाते द्वंद्वात्मक प्रणाली से भी जाना जा सकता है। भौतिकवादी प्रत्यय एवं पदार्थ को सबसे पहले मानते हैं। उनका मानना है कि प्रत्यय , पदार्थ के बाद ही सृष्टि में आया। इसलिए पदार्थ की सृष्टि प्रत्यय से न होकर प्रत्यय की सृष्टि पदार्थ में हुई।

राहुल सांकृत्यायन जी जिसके संपर्क में गए , उसकी पूर्ण जानकारी उन्होंने हासिल की। जब वे साम्यवाद के क्षेत्र में गए , तो कार्ल मार्क्स , लेनिन, स्टालिन आदि के राजनीतिक दर्शन की पूर्ण जानकारी प्राप्त की। इन्होंने अपने उपन्यासों में मार्क्सवाद के आधारभूत सिद्धांतों का भी उल्लेख किया है। यही कारण है कि उनके साहित्य में जनता , जनता का शासन और मेहनतकश मजदूरों का स्वर प्रबल और प्रधान है। इनकी रचनाओं में प्राचीन के प्रति आस्था , इतिहास के प्रति गौरव और वर्तमान के प्रति सधी दृष्टि का समन्वय देखने को मिलता है। सर्वहारा के प्रति विशेष लगाव होने के कारण उनके उपन्यासों में वे किसानों , मजदूरों और मेहनतकश लोगों की बराबर हिमायत करते दिखते हैं।

राहुल जी का उपन्यास 'भागो नही दुनिया को बदलो' एक राजनीतिक उपन्यास है। इसका उद्देश्य है कि कम पढ़े-लिखे लोग राजनीति को समझ सकें। अब जब वे समानता के साथ जीना चाहते हैं तो आवश्यक है कि उन्हें अपनी अच्छाई-बुराई भी मालूम हो और उन्हें इस बात का भी

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पता चले कि राजनीति की दुनिया में कैसे दाँव -पेंच खेले जाते हैं। इस रचना को राहुल जी ने जनसामान्य के लिए सुलभ करने के लिए जनभाषा का प्रयोग किया है।

लेखक यहां स्पष्ट करते हैं कि 'राजनीति को थोड़े से पढ़े लिखे आदमियों' के हाथ में देकर अब चुप नहीं बैठा जा सकता। भारतीय जीवन में व्याप्त विपन्नता एवं विसंगतियां कृति का मूल कथ्य हैं। पूंजीवाद, साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद को राहुल जी ने जोंकें कहा है। वे मरकस बाबा (कार्ल मार्क्स) को जोंकों का दुश्मन बताते हैं। दिया अवतारवाद और ईश्वर के अस्तित्व का विरोध इस प्रकार करते हैं - "एक-एक साल में एक -एक करोड़ या साठ -साठ लाख आदमियों को जोंकें चूसकर मार डालें , फिर भी भगवान अवतार ने ले , तो उनके सब औतारों की कथा झूठी है।"[iii]

राहुल जी अपने उपन्यास संसार के कथ्य से "वर्गभेद की खाई का उन्मूलन कर , स्त्री पुरुष के भेद को मिटाकर, धार्मिक रूढ़ियों का निष्कासन कर, सर्वांगीण समता, आर्थिक स्वतंत्रता, एवं बौद्धिकता पर आधारित एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते हैं। "[iv] इनका समस्त साहित्य, इन सिद्धांतों को कसौटी पर कसकर , समाज का नवनिर्माण करना चाहता है। वे जीवन की उन्नति के लिए लिखते हैं। उनके बारे में डॉक्टर गणपति चंद्रगुप्त लिखते हैं - "उन्होंने अतीत की विभिन्न घटनाओं एवं परिस्थितियों का अंकन करते हुए तत्वों का उद्घाटन किया है जिससे भौतिकवादी जीवन दृष्टि, वर्ग संघर्ष की भावना, रूढ़िवादिता की निसारता तथा साम्यवादी सिद्धांतों की पुष्टि हो सके।"[v]

इन्होंने अपने उपन्यास दिवोदास में भी साम्यवादी चिंतन के दर्शन करवाए हैं। यद्यपि वह प्रत्यक्ष या स्पष्ट उदाहरण नहीं है , फिर भी आर्यों की आजीविका और खाद्य -पेय पदार्थों पर समाधिकार को स्पष्ट करता है। दिवोदास में राहुल जी लिखते हैं - "सप्तसिंधु काल में आर्यों का जीवन 'साम्य' के आधार पर था, उनमें विषमता न थी। अपनी जीविका के लिए अपने गौ, अश्व, अजा, अवि पर्याप्त थे , पर उनकी तो मान्यता थी - 'केवलाघो भवति केवलादी ' केवल खुद खाने वाला पाप खाता है।"[vi]

उनके सभी उपन्यासों जैसे सिंह सेनापति , जय यौद्धेय, मधुर स्वप्न, विस्मृत यात्री, जीने के लिए, भागो नहीं दुनिया को बदलो और बाईसवीं सदी में तो साम्यवादी सिद्धांतों का विशद प्रतिपादन किया गया है। 'सिंह सेनापति' के इस प्रसंग को देखा जा सकता है। "तक्षशिला में दासों और भिखारियों का अभाव है। प्रत्येक व्यक्ति जीविका के लिए श्रम करता है और उस पर का भोक्ता भी है।"[vii]

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राहुल जी राजतंत्र से गणतंत्रीय व्यवस्था की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। "यहां गणतंत्रीय शासन व्यवस्था है। रज्जुलों के अत्याचार यहां नहीं। सभी को बराबरी के अधिकार हैं। सभी उन्मुक्त वातावरण में जीवन जीते हैं, उनका जीवन आनंदमय है।"[viii]

वे समता के लिए संघर्ष का आवाहन करते हैं- "इसके लिए बहुजन को उद्बुद्ध करना होगा, उनमें ऐक्य स्थापित करना होगा , फिर शोषकों का अंत अवश्यंभावी हो जाएगा , और भूमि पर वस्तुतः स्वर्ग उतरेगा।"[ix]

राहुल जी समानता के लिए अपने मौलिक विचार प्रकट करते हैं - "धन में समानता लाए बिना मनुष्य-मनुष्य में भ्रातृभाव विकसित नहीं हो सकता। दुनिया के दु :खों को दूर करने के लिए मनुष्य मात्र में समता , भोंगों की समता , कामों की समता स्थापित करना ही एक मार्ग है।"[x]

राहुल जी पूंजीवाद को समाज के लिए सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं। पूंजीवादियों के लिए एवं शोषकों के प्रति राहुल जी के मन में अपार घृणा है। इसके विपरीत शोषित , श्रमिक एवं कृषकों के प्रति उनके मन में अपरिमित सहानुभूति है। उनका मानना है कि शोषित वर्ग श्रम करता है, परंतु है अपने श्रम को भोक्ता नहीं, उसे केवल जीवित रहने के लिए श्रम का कुछ भाग दिया जाता है। परंतु शोषक वर्ग उसके धन श्रम को हथियाकर मौज का जीवन बिताता है। उसके शोषण के अनेक तरीके हैं। इसके बारे में जय यौद्धेय में लिखते हैं - "मार्जार हैं यह दुनिया की ठगने वाले , जिनके फंदो का कोई ठिकाना नहीं। कहां -कहां तक गिनाऊं और बेचारा बहुजन - साधारण जनता मूसा है।"[xi]

राहुल जी इन सभी बीमारियों का एकमात्र औषध मार्क्सवाद (साम्यवाद) को मानते हैं। इसके द्वारा सामाजिक बुराइयों से सहजतापूर्वक निपटा जा सकता है। जाति -भेद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता से लड़ने में यह अचूक बाण है। उनका मत है कि सभी बातों को भूल मानव कल्याण करना साम्यवाद का ध्येय है। वे कहते हैं- "साम्यवाद का ध्येय वैज्ञानिक आविष्कारों के उपयोग द्वारा मानव-समाज के लिए सुख साधनों की वृद्धि करना है।"[xii]

राहुल जी मानव की स्वतंत्रता एवं समानता के पक्षधर हैं उनका मानना है कि मानव स्वार्थवश दूसरे के साथ क्रूरता का व्यवहार करता है। यदि समानता का वातावरण होगा जैसा कि गणतंत्रीय व्यवस्था में होता है तो व्यक्ति को इस स्थिति का सामना नहीं करना पड़ेगा। "तो दुनिया को वैकुंठ बनाने के लिए कौन सी चीज की जरूरत है। भरपेट खाने को मिले अच्छा

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अन्न, घर भर को लाज ढांकने , जाड़ा गर्मी से बचने के लिए कपड़ा मिले , घरणी के मुंह पर चिंता, फिकिर की छांह न पड़े। इतना हो जाने पर दुनिया नरक नहीं रह जाएगी।"[xiii]

इसी साम्यवादी चिंतन के आधार पर राहुल जी बाईसवीं सदी के आदर्श को भविष्य की कल्पना का आधार बनाकर वर्तमान के रूप में देखना चाहते थे। यह बाईसवीं सदी सामान्यतः हमारे समाज और चिंतन में विद्यमान यूटोपिया का ही अनुरूप है। राहुल जी ने इसका स्वाद अपनी कल्पना में चख लिया था , लेकिन हमारे लिए अब भी वह दूर है। बेहतर भविष्य की कामना मनुष्य के दिल एवं दिमाग से निकल नहीं सकती, पैर भले ही उसके कीचड़ में धंसे रहें। राहुल जी ने 'जीने के लिए ' उपन्यास में- "वर्तमान शताब्दी की राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को लेते हुए एक संघर्षमय जीवन का चित्र खींचा है। "[xiv] देश में किसान -सभाओं और श्रमिक संघों का विकास जिस तेजी से हो रहा था। इस कारण राष्ट्रीयता में क्रांतिकारी तत्व और स्वाधीनता की अवधारणा का प्रवेश सहज ढंग से हो रहा था। यहां यह भी द्रष्टव्य है - "अपितु इसके लिए उन्हें जनता का मानसिक और शारीरिक सहयोग लेना होगा और जब तक ऐसा नहीं किया जाता, तब तक कार्य का रूप और परिणाम व्यापक हो ही नहीं सकता।"[xv]

साम्यवाद की नीतियों और शिक्षाओं का प्रचार प्रसार होने से श्रमिक वर्ग में एकता और जागरूकता आई और उन्हें पूंजीपतियों के राजनीतिक दांव -पेंच समझ में आने लगे , परिणामत: मजदूरों के जीवन में भी कुछ आशा का संचार हुआ।

राहुल जी का मानना है कि पूंजीवाद और सामंतवाद के शोषण और अत्याचारों से, श्रमिक वर्ग की अत्यंत दयनीय दशा तथा उच्च और निम्न वर्ग के मध्य सदैव वर्ग संघर्ष की स्थिति कायम रहती है। उत्पादन के विभिन्न साधनों पर पूंजीपतियों का अधिकार है। शिक्षा , धर्म, कानून, अदालत सभी पर इनका ही अधिपत्य है क्योंकि देश की सरकार इनकी है। अपने लाभ के लिए यह श्रमिक वर्ग का हरसंभव शोषण करते हैं। यदि श्रमिक वर्ग के हाथ में सत्ता आ जाए तो समाज का ढांचा ही परिवर्तित हो जाएगा। कमेरों की सरकार बन जाने पर समाज में वर्ग संघर्ष, असमानता, अशिक्षा, शोषण, अत्याचार, पूंजीपति समाज , आर्थिक विषमता और राजनीतिक दांव-पेंच, समाप्त हो जाएंगे। साम्यवादी समाज की उन्नति से प्रभावित हो राहुल जी ने साम्यवाद को भारत के लिए आवश्यक माना है।

साम्राज्यवाद मनुष्य की शोषण वृत्ति का चरम रूप है। साम्राज्यवाद में आर्थिक शोषण के अतिरिक्त मानव की समानता , स्वतंत्रता संबंधी मौलिक अधिकारों का अपहरण कर लिया जाता है। राहुल जी साम्राज्यवादी वृत्ति के कटु आलोचक हैं। राहुल जी ने अपने उपन्यासों में विविध

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 9, Issue 5 (May 2019)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समस्याओं का व्यापक तथा गहराई से चित्रण किया है। वे समाज के प्रति प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। वे ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते हैं जहां ऊंच-नीच, सवर्ण, अवर्ण एवं गरीब, अमीर का भेद न हो, वहां धार्मिक परंपरा का आडंबर ने हो, श्रम की प्रतिष्ठा हो, ईश्वर पर भरोसा करने की बजाय बाहुबल पर विश्वास करें, प्रत्येक को सामाजिक न्याय मिले और प्रगति के समान अवसर भी। उनके अनुसार अज्ञान का दूसरा नाम ईश्वर है। समाज और चेतना का घनिष्ठ संबंध होता है - समाज में वैषम्य, शोषक-शोषित, अमीर-गरीब आदि का संबंध समाज और चेतना से है। इनके उपन्यास साहित्य में समाजवादी यथार्थ की कट्टरता दिखाई देती है। मार्क्सवादी विचारधारा ने कला और साहित्य के संबंध में सर्वथा एक विशिष्ट दृष्टि को जन्म दिया है। समाज के विकास का प्रमुख बाधक तत्व है धन का अभाव। समाज का विभिन्न स्तरों पर विकास होता है। वे पूंजीपतियों के हाथ में स्थित पूंजी प्रभुत्व सत्ता के विरोधी हैं। राहुल सांकृत्यायन जी समाज की सारी बुराइयों के मूल में पूंजीवाद को मानते हैं। समाज में चोरी , बेईमानी, भ्रष्टाचार, जाति-पाति जैसी चीजें हैं ,वे व्यक्ति विशेष की देन नहीं , पूंजीवादी व्यवस्था की देन हैं। उन्होंने पूंजीवाद की समाप्ति के लिए साम्यवाद को उपाय के रूप में स्वीकार किया है। वे मानव के बाहुबल को जगाकर सामाजिक क्रांति के पक्षधर रहे हैं।

---

[i] राहुल सांकृत्यायन, वोल्गा से गंगा की भूमिका में।
[ii] राहुल सांकृत्यायन, वोल्गा से गंगा, पृष्ठ 197
[iii] राहुल सांकृत्यायन, भागो नहीं दुनिया को बदलो, पृष्ठ 45
[iv] डॉ सुबोधचंद्र सक्सेना, राहुल का कथा साहित्य
[v] डॉ गणपति चंद्रगुप्त, हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, भाग-2, पृष्ठ 925
[vi] राहुल सांकृत्यायन, दिवोदास, पृष्ठ 20
[vii] राहुल सांकृत्यायन, सिंह सेनापति, पृष्ठ 33
[viii] राहुल सांकृत्यायन, सिंह सेनापति, पृष्ठ 71-72
[ix] राहुल सांकृत्यायन, मधुर स्वप्न, पृष्ठ 265
[x] राहुल सांकृत्यायन, मधुर स्वप्न, पृष्ठ 183
[xi] राहुल सांकृत्यायन, जय यौधेय, पृष्ठ 174
[xii] राहुल सांकृत्यायन, साम्यवाद ही क्यों?, पृष्ठ 39
[xiii] राहुल सांकृत्यायन, भागो नहीं दुनिया को बदलो, पृष्ठ 19
[xiv] राहुल सांकृत्यायन, राहुल निबंधावली, पृष्ठ 04
[xv] राहुल सांकृत्यायन, जीने के लिए, पृष्ठ 59